'वो जो अच्छाई करने में बहुत ज्यादा व्यस्त है, स्वयं अच्छा होने के लिए समय नहीं निकाल पाता।'

- रवींद्रनाथ टैगोर

अच्छी सोच

अध्यात्म में जीवन उलटे पेड़ जैसा क्यों ?

भारतीय अध्यात्म में मानव जीवन को बरगद के उलटे पेड़ के रूप में दर्शाया गया है। ऐसा पेड़ जिसकी जड़ें आसमान में हैं। यह वृक्ष अमर है। जो इसे जान लेता है, वह जीवन की वास्तविकता को जान लेता है। यानी मानव एक आध्यात्मिक अस्तित्व है। उसकी सबसे बड़ी जरूरत दुनिया को जानना ही नहीं है, खुद को बेहतर ढंग से जानना भी है। इस आध्यात्मिक अस्तित्व को ऊपर से पोषण मिलता है, इसीलिए वृक्ष की जड़ें ऊपर बताई गई हैं। चेतना को उच्च स्तर पर ले जाकर इस वृक्ष को जाना जा सकता है।

प्रणाम मीना ऊं
प्रणाम फाउंडेशन, नोएडा

चेतना के स्तर में बदलाव तो भीतर से ही आएगा। हम माला के मनके घुमाते रहते हैं। इससे मन का यानी हृदय का फेर नहीं जाता। हाथ का मनका छोड़कर, हृदय के मनके को घुमाने की जरूरत है। खूब पूजा की, भक्ति की, रीति से हवन अर्चना की। मन को कुछ संयम, शांति तो मिलती ही है पर यह तभी सफल होगा जब अपने अंदर जाकर काम किया जाए। भीतर जाकर मन की अदालत लगानी आ जाए, वही प्रभु की सच्ची अदालत है। जहां क्षमा, प्रेम और शुक्रिया ही शुक्रिया है। इसे प्राप्त करने की सबसे बड़ी कुंजी है, सत्यमय होना। मन, वचन, कर्म से सत्य होना। जो सोचो वही बोलो, वही करो। तीनों को एक करना ही तपस्या है। यानी आत्मा, बुद्धि और शरीर को साथ लेना।

आत्मा को पहचानकर उसकी सत्ता न भूलना सद्बुद्धि देता है। सद्बुद्धि में सद्विचार होंगे तो अच्छा ही अच्छा सोचा जाएगा। वही वाणी में बदलेगा फिर कर्म स्वतः अच्छे ही होंगे। सत्य की शक्ति से समस्त ज्ञान के द्वार खुलते हैं, कुछ ढूंढ़ना नहीं पड़ता। हमारे ग्रंथों में एक बात अक्सर आती है, प्रभु ने दर्शन दिए और पूछा, वर मांग। उनसे क्या छुपा है। फिर यह वर मांगने की बात कैसी? पर वे पूछकर यह जानना चाहते हैं कि तुम कितने पानी में हो? तुम्हारी बुद्धि क्या मांग रही है। इसी मांग से तुम्हारी पात्रता पता लग जाती है। तुम्हें वही मिलता है, जिसके तुम योग्य हो। मांगने के लिए भी सावित्री और नचिकेता जैसी सच्ची लगन चाहिए। यदि आप सत्य रूप हो जाते हो तो खुद ऐसे चुंबक बन जाओगे कि वातावरण और परिस्थितियां आपके अनुकूल बन जाएंगी। पाप वही है जो आपकी आत्मा पर बोझ डाले। जिस बात को आप सत्यता से दूसरों के सामने कबूल न कर सकें वही पाप है। बोझ हो जाता है आत्मा के ऊपर। सत्य तो आज़ाद कराता है निर्द्वंद्व बनाता है, आत्मा से एकाकार कराता है। निर्भय करता है।

प्रेरणा • टेक्नोलॉजी में माहिर युवा पीढ़ी देगी बल, विकसित होगी ज्ञान आधारित नई अर्थव्यवस्था

भारत में होंगे अगले दौर के नए इनोवेशन

राजीव चंद्रशेखर
राज्यसभा सांसद व टेक्नोलॉजी आंत्रप्रेन्योर

देश को डिजिटल शक्ति से संपन्न और ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था बनाने की दिशा में डिजिटल इंडिया कार्यक्रम उम्मीद जगाता है। यही इसका घोषित उद्देश्य भी है। जाहिर है हमने सरकार का चेहरा व लोगों की जिंदगी बदलने की टेक्नोलॉजी की क्षमता को पहचान लिया है।

कई लोगों के लिए डिजिटल इंडिया का मतलब टेक्नोलॉजी का कोई आकर्षक मंच है। समाज के ऊपर के तबकों के लिए इसका अर्थ फेसबुक व ट्विटर हो सकता है- पूरा देश स्मार्टफोन से लगा बैठा है, कुछ ऐसी छवि उनके दिमाग में आती है। किंतु डिजिटल इंडिया का संबंध शासन के मूल आधार को बदलकर रख देने से है। इसका नागरिक व सरकार और सरकार से सरकार के रिश्तों व कामकाजी व्यवहार में सीधा सकारात्मक असर होगा। सबसे बड़ी बात यह है कि इससे इनोवेशन आधारित अर्थव्यवस्था विकसित होगी। उद्योग जगत का तो मानना है कि अगले स्तर के इनोवेशन और आविष्कार भारत में ही होंगे।

इस बात में कोई संदेह नहीं है कि पिछले 25 वर्षों के आर्थिक उदारीकरण ने संपत्ति और समृद्धि निर्मित की है। इसमें भी कोई विवाद नहीं है कि इससे गरीबों पर पैसा खर्च करने की सरकार की क्षमता भी बढ़ी है। परंतु वास्तविकता यह है कि सरकार से मदद हासिल करने के लिए करोड़ों भारतीय अब भी बहुत ही कमजोर और भ्रष्ट व्यवस्था पर निर्भर हैं। इसके कारण उन्हें दुश्वारियों से बाहर लाकर उनकी पहुंच गुणवत्तापूर्ण, बेहतर जिंदगी तक बनाने की बजाय निराशा का दौर ही लंबा हो रहा है। इस पृष्ठ भूमि में डिजिटल इंडिया की पहली प्राथमिकता टेक्नोलॉजी का उपयोग कर बिचौलियों, दलालों या राजनीतिक मध्यस्थों के बिना सरकार को लोगों तक पहुंचाना है। इसी तरह आर्थिक मदद के कार्यक्रमों को भ्रष्टाचार की भेंट चढ़े बिना लोगों तक पहुंचाना भी इसका मकसद है। व्यापक स्तर पर देखें तो टेक्नोलॉजी से सारे ही नागरिक मंजूरी, सेवाओं या किसी भी अन्य जरूरत (जैसे जन्म-मत्यु प्रमाण-पत्र, राशन कार्ड आदि) के लिए सरकार के साथ व्यवहार कर सकते हैं। वह भी कुख्यात लालफीताशाही की परेशानियों या दलालों का सामना किए बिना।

पिछले दस वर्षों में यूपीए सरकार के कार्यकाल में हुए घोटालों के कारण सरकारों की सफाई राष्ट्रीय संकल्प हो गया है। जैसेकि अर्थव्यवस्था के बढ़ने के साथ सरकार की

> ऑनलाइन व्यवस्था से कितना बड़ा फायदा हो सकता है यह हम टेलीकॉम स्पेक्ट्रम व कोयले की नीलामी देख ही चुके हैं, जिनसे सरकार को 3 लाख करोड़ रुपए मिले हैं।
>
> सरकार इनोवेशन को प्रोत्साहन देने वाला तकनीकी माहौल निर्मित करे। अगले दशक में तकनीकी इनोवेशन रोजमर्रा के जीवन में इंटरनेट के उपयोग पर केंद्रित रहेगा।

खर्च करने की क्षमता भी बढ़ी है। इस साल की ही बात करें तो सरकार 13 लाख करोड़ रुपए का उपयोग कार्यक्रमों और व्यावसायिक ठेकों पर करने वाली है। सार्वजनिक संपत्ति या धन को सरकार जिस तरह उपयोग में लाती है, उसमें बहुत कम पारदर्शिता है। यहीं पर डिजिटल इंडिया का दूसरा लक्ष्य सामने आता है- सरकार को ऑनलाइन बनाना ताकि सार्वजनिक धन से संबंधित सारे फैसले पारदर्शी रखकर उनकी जानकारी लोगों को हो।

ऑनलाइन नीलामी से कितना बड़ा फायदा हो सकता है यह हम टेलीकॉम स्पेक्ट्रम व कोयले की नीलामी में देख ही चुके हैं, जिनसे सरकार को 3 लाख करोड़ रुपए मिले हैं। यह 'ऑनलाइन सरकार' राजनीतिक भ्रष्टाचार के सबसे बड़े स्रोत को खत्म कर देती है और वह स्रोत है सरकारी ठेके और सौदें। जैसा की हाल की घटनाओं ने दिखाया है कि कुछ कंपनियों ने सरकारी सूचना तक पहुंचने की अपनी ताकत का उपयोग कर सरकारी नीतियों को प्रभावित किया है और इस तरह फैसले कुछ थोड़े से लोगों के पक्ष में हुए। कुछ कॉर्पोरेट और राजनीतिक-ब्यूरोक्रेटिक हित लंबे समय तक सिर्फ इसलिए फलते-फूलते रहे, क्योंकि सार्वजनिक स्तर पर जानकारी उपलब्ध नहीं थी और लोग अज्ञान के अंधकार में काम करते रहे। डिजिटल इंडिया नीति निर्धारण को न सिर्फ खुले में ले आएगा, बल्कि वह जनता के क्षेत्र में ले आएगा यानी जनता उसका फैसला करेगी। इसके साथ ही कॉर्पोरेट और निवेशकों के लिए राजनीतिक तत्वों से संबंध रखना अप्रासंगिक हो जाएगा। डिजिटल इंडिया के फायदे वास्तविक हो सकते हैं और यह भारत का भविष्य बदल सकते हैं। दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र होने और टेक्नोलॉजी में माहिर युवा आबादी के साथ भारत वैश्विक नेतृत्व में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। परंतु इसके लिए सबसे पहले ऐसा ढांचा खड़ा करना होगा कि निवेश तथा उद्यमियों को इनोवेशन और भारत के निजी सेक्टर में भागीदारी का मौका मिल सके। इस साल मार्च में सुप्रीम कोर्ट ने इंटरनेट स्वतंत्रता पर दूरगामी फैसला देकर सूचना तकनीक अधिनियम 2000 की धारा 66ए को खारिज कर दिया। इसके लिए मैंने जनवरी 2013 में जनहित याचिका दायर की थी। इस फैसले के साथ भारत ने डिजिटल रूपांतरण की दिशा में बड़ी छलांग लगा दी।

सब तक इंटरनेट की पहुंच के लक्ष्य पर चलने के साथ सरकार को इस पर भी गंभीरता से विचार करना चाहिए कि वह इंटरनेट आधारित सेवाओं के अपने 1.20 अरब ग्राहकों को सुरक्षा देने के लिए कैसी नीतियां अपनाएगी। नेट न्यूट्रलिटी की तात्कालिक चुनौती से पहले निपटना होगा। विविधतापूर्ण उपभोक्ता जरूरतों और सबतक नेट पहुंचाने के लक्ष्य को ध्यान में रखना होगा। डिजिटल इंडिया की सफलता की कुंजी इसमें है कि सरकार इनोवेशन को प्रोत्साहन देने वाला तकनीकी माहौल निर्मित करे। अगले दशक में तकनीकी इनोवेशन रोजमर्रा के जीवन में इंटरनेट के उपयोग पर केंद्रित रहेगा। इसे ही इंटरनेट ऑफ थिंग्स कहा जाता है। मशीन से मशीन के बीच इंटरनेट के प्रति मौजूदा नीति की दिशा विभाजित है। इस विभाजन को और स्पष्ट करते हुए तकनीकी मंत्रालय और इलेक्ट्रॉनिक व सूचना तकनीक मंत्रालय दोनों अपने स्वतंत्र मसौदे तैयार कर रहे हैं। इसकी बजाय एक व्यापक नीतिगत ढांचे की जरूरत है।

शिक्षा, उद्योग और टेक्निकल समुदाय के विशेषज्ञों के मार्फत नीति तैयार कर इनोवेशन को बढ़ावा देने का लक्ष्य रखना चाहिए। डिजिटल इंडिया अपने मूल दृष्टिकोण में सरकार व नागरिकों की जिंदगी को बदलने में टेक्नोलॉजी को प्रमुख जरिया मानता है। यह अपने आप में हमारे देश के लिए सही दिशा में उठाया गया बड़ा कदम है। जैसा कि प्रत्येक विज़न और सराहनीय उद्देश्य में होता है, क्रियान्वयन संबंधी ब्योरे ही उस विचार को बना या बिगाड़ सकते हैं। सरकार के पास अगले 50 माह का समय है कि वह डिजिटल इंडिया को ड्राइंगबोर्ड से उठाकर लोगों की जिंदगियों का हिस्सा बना दे।

खुशी के रंग

बच्चों को सबसे ज्यादा खुशी किसी चीज से मिलती है, तो वह है खेल। उसमें भी अगर पानी में खेलने को मिल जाए तो क्या बात है। उनकी मस्ती दोगुनी हो जाती है। यह चार साल का ब्रायन है, जो अमेरिका के वेस्ट वर्जीनिया में शुरू हुए नए स्प्लैश पार्क में बहन और परिवार के साथ पहुंचा और जैसे ही वह फव्वारों के नीचे गया, उसके उत्साह को कैमरामैन शोल्टन सिन्ज ने फोटो बना दिया।

तो ये करें...

जब लक्ष्य हासिल करने में विफलता मिले

नाकामियां स्वीकारें प्रयासों को नया रूप दें

असफलता या नाकामी एक ऐसी अवस्था है, जिसमें तय लक्ष्य प्राप्त नहीं होता। विफलता व्यक्ति को इतनी तकलीफ इसलिए देती है, क्योंकि यह स्वीकारना बहुत कठिन होता है कि हमने गलतियां की हैं। विफलता स्वीकारने का मतलब है कि आप प्रयासों को नया रूप देंगे, जिसके सफल होने की ज्यादा संभावना होगी। जो सार्वजनिक रूप से नाकाम होते हैं और उसे गरिमा के साथ स्वीकार करते हैं, उन्हें लोग सम्मान देते हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि यह व्यक्ति भी हमारे जैसा ही गलतियां करने वाला व्यक्ति है। इससे उस व्यक्ति का भी आत्मविश्वास कायम रहता है।

असफलता छुपाएं नहीं, फख्र से बताएं

हमारा दिमाग एक दिशा में काम नहीं करता। वह भ्रमित होता है, फिर अनुमान लगाता है। फिर अटकल पर काम करता है और अनुमान लगाता है। नाकाम होता है। फिर पीछे जाता है, दोहराता है। दिमाग प्रिडिक्शन इंजन और पेटर्न रिकग्नाइजिंग मशीन है। हम अनुभव से अनुमान लगाते हैं और राह निकालकर आगे बढ़ते हैं। दिमाग में विफलता से सीखने की अनूठी काबिलियत होती है। यानी विफलता कोई दाग नहीं है बल्कि हमारे सीखने के तरीके का प्रोजेक्शन है। सिलिकॉन वैली की एक विफल स्टार्टअप कंपनी की प्रमुख कैसेंड्रा फिलिप्स ने विफल कंपनियों की कॉन्फ्रेंस फैलकॉन शुरू की। हर साल 500 से ज्यादा कंपनियां आतीं और विफलता की चर्चा करतीं। सभी को कुछ न कुछ सीखने को मिलता। इससे सिलिकॉन वैली में माहौल बदल दिया। अब विफलता वहां छिपाने की नहीं, दिखाने की, फख्र की बात हो गई है।

अन्य लोगों से तुलना मत कीजिए

विफलता का भय यानी चिंता का भविष्य में प्रक्षेपण और भूतकाल पर निर्भरता है। खुद को वर्तमान में लाएं। जो इस पल कर रहे हैं, उस पर केंद्रित रहें। इससे आपकी रचनात्मकता और इनोवेशन की प्रेरणा फलेगी-फूलेगी। किसी भी काम को संपूर्णता से करना यानी परफेक्ट होना अच्छा है, लेकिन यह गुण यदि आपको पीछे खींच रहा हो तो इस पर काबू पाएं। हमेशा परफेक्ट होने की चाह, निराशा के बीज बोने जैसा है। प्रयोग करने के बाद विफल होना बेहतर मानवीय प्रवृत्ति है। दूसरों से या कामयाब लोगों से तुलना न करें। रातोंरात सफलता दुर्लभ होती है। आमतौर पर सफलता के पीछे कठोर मेहनत और काफी प्रयास होते हैं।

गलतियों को रोज डायरी में लिखें

विफलता स्वीकार कर उसे पहचानना ही उससे पार पाने का मंत्र है। इसके लिए अपनी गलतियों को एक डायरी में दर्ज करना शुरू कर दीजिए। कार्यस्थल पर, घर पर या दोस्तों के साथ कौन सी गलतियां हुईं। सब लिख डालिए। फिर देखें कि क्या आपने इन्ट्यूशन यानी अपनी सहज वृत्ति नजरअंदाज कर सुरक्षित रास्ता अपनाया और बाद में पछताएं? या आपने ऐसी जोखिम ली, जिसका प्लान ठीक नहीं था? गलतियां दर्ज करते रहने से आपको गलतियों का पैटर्न नजर आने लगेगा। यह देखें कि कौन-सी गलतियां आप दोहरा रहे हैं और उनसे आपने क्या सीखा।

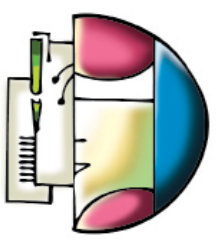

द न्यूयॉर्क टाइम्स से

दुनिया की सबसे बड़ी चिंता : रोबोटिक हथियार

आधुनिकता से भरी इस दुनिया में अब ऐसे हथियार बनाए जा चुके हैं, जिन्हें युद्ध भूमि में एक बार तैनात कर दिया तो उन्हें काबू में रखना नामुमकिन हो जाएगा। खासतौर से रोबोटिक आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस आधारित केमिकल हथियार। इसमें ड्रोन तकनीक भी शामिल है। इनके घातक परिणामों का अनुमान लगाकर दुनिया के शीर्ष विद्वानों ने एक खुला पत्र जारी किया है, जिसमें इन पर वैश्विक प्रतिबंध लगाने की मांग की गई है। ये केवल मानव ही नहीं, बल्कि पूरी धरती और मानवजाति के लिए खतरनाक हैं।

• जैरी कैपलानोग, अमेरिकी कम्प्यूटर साइंटिस्ट

दुनिया के दिग्गज वैज्ञानिकों एवं टेक्नोलॉजी जगत की हस्तियों ने ऐसे हथियारों पर चिंता जाहिर की है, जो कभी भी अनियंत्रित होकर आम नागरिकों व हमारी इस धरती को बड़ा नुकसान पहुंचा सकते हैं।

ड्रोन विमान का उपयोग, ड्रोन कैमरे से कवरेज, जासूसी और इसके अतिरिक्त रोबोटिक हथियारों का लगातार बढ़ता उपयोग इस धरती को बड़ा नुकसान पहुंचा सकता है। यह चलन इतना बढ़ जाएगा कि इसे रोक पाना किसी के बस में नहीं होगा। आम लोगों को भी इससे नुकसान पहुंच सकता है। ऐसी चिंताएं दुनिया के विज्ञान और टेक्नोलॉजी के एक हजार से ज्यादा दिग्गजों ने जाहिर की है। इनमें मशहूर वैज्ञानिक स्टीफन हॉकिंग और एपल के संस्थापकों में से एक स्टीव वोजनिएक भी शामिल हैं। सभी ने खुला पत्र जारी करके मांग की है कि ड्रोन जैसे स्वतंत्र हथियारों पर वैश्विक प्रतिबंध लगाया जाए। ये ऐसे हथियार हैं, जो टारगेट की पहचान होते ही हमला कर सकते हैं। इनमें मनुष्य को फैसला लेने का वक्त भी नहीं मिलता है।

आम लोगों के अलावा विशेषज्ञ भी इस बात पर चिंता जता चुके हैं कि आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (एआई) आधारित उपकरण कभी भी मनुष्य के नियंत्रण से बाहर जा सकते हैं जैसा टर्मिनेटर फिल्मों में दिखाया जाता है। इनके आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस संबंधी लाभ युद्ध के मैदान में संभावित हो सकते हैं, लेकिन उसके लिए सख्त परीक्षण जरूरी हैं। पत्र जारी करने वाली शख्सियतों में केमिकल एवं बायोलॉजिकल हथियार निर्माता, परमाणु मिसाइल निर्माता एवं ब्लाइंडिंग लेजर निर्माता तक शामिल हैं। हालांकि जिन हथियारों के सिस्टम हाई-टेक डिजाइन वाले हैं और जिनमें रोबोटिक टेक्नोलॉजी होती है, वे हथियार मूक होते हैं। मुख्य रूप से केमिकल और बायोलॉजिकल हथियार, जिन्हें एक बार तैनात कर दिया, तो उसके बाद उन पर नियंत्रण पाना नामुमकिन होता है। किसी हथियार को जब एआई के आधार पर तैयार किया जाता है, तो उनमें सुधार होने की क्षमता इतनी भी नहीं होती, जितनी स्मार्टफोन की होती है। उसके महंगे कैमरे एवं सेंसर बड़ों, बच्चों और जानवरों में पहचान कर सकते हैं। अच्छा हो यदि एआई डिवाइस भी ऐसे व्यक्ति की पहचान कर ले, जो यूनिफॉर्म में एवं हथियारों के साथ हो। वह केवल सैन्य वाहनों को निशाना बनाए बजाय आम नागरिकों के वाहनों के। अभी इस तरह के डिवाइस आक्रामक स्वतंत्र हथियारों की तरह हैं। एआई क्षमता आधारित ड्रोन हेलिकॉप्टर किसी टारगेट पर निशाना लगाने में मानव से ज्यादा सटीक हो सकते हैं। युद्ध भूमि में कोई सैनिक अपनी या साथी की जान बचाने के लिए इनसे लगातार रिटर्न फायर कर सकता है। इसके विपरीत मेरा मानना है कि कोई मशीन न तो

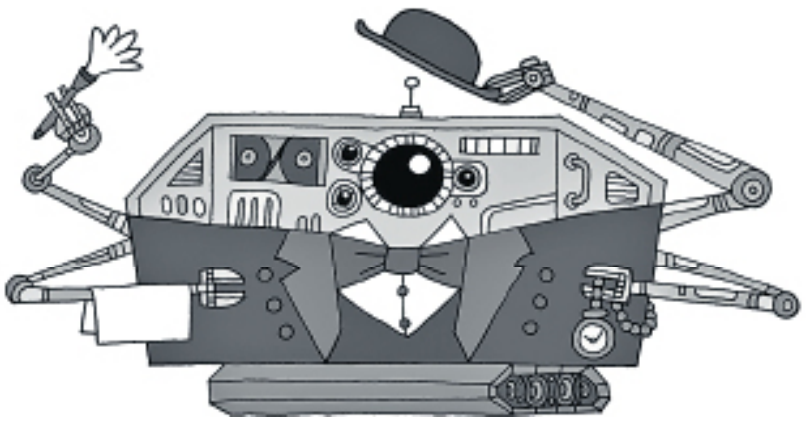

भयभीत हो सकती है, न उत्सुक और न ही उसमें नफरत या पूर्वग्रह हो सकता है। वह जानबूझकर आदेशों की अवहेलना भी नहीं कर सकती और न उसे ये सिखाया जा सकता है कि आत्मरक्षा कब और कैसे करनी है। फिलासॉफर बीजे स्ट्रासर ने तर्क दिया है कि न तो मनुष्य परफैक्ट है और न ही मशीन। अन्य शब्दों में कहा जाए तो एआई वेपन सिस्टम अगर मनुष्य की तुलना में खतरनाक काम अच्छे से कर सकता है, तो हमारा नैतिक दायित्व है कि हम उनका उपयोग करें। निश्चित तौर पर ऐसा हो सकता है। आज टेक्नोलॉजी उतनी ही प्रभावी है, जितना कि मनुष्य। उसे पूरी तरह नियंत्रित किया जा सकता है। इसके लिए जरूरी है कि उसे साबित किया जाए, लेकिन ये सब पहले से मानकर चलना ठीक नहीं है। किसी भी स्थिति में एआई क्षमता वाले हथियारों पर प्रतिबंध प्रभावी नहीं रहेगा। वे रॉकेट साइंस नहीं होते, उनके लिए एडवांस नॉलेज की जरूरत नहीं होती और न ज्यादा खर्च होता है। वे किसी भी रूप में व्यापक स्तर पर उपलब्ध हो सकते हैं। जरूरत इस बात की है कि एआई हथियारों को इंजीनियरिंग की खामी बताई जाए ताकि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ऐसे हथियारों के लिए स्टैंडर्ड लागू किए जा सके। उनका समुचित परीक्षण हो और तैनाती के बाद भी उन्हें पूरी तरह नियंत्रण में रखा जा सके। इसके पहले कि हमारी धरती टर्मिनेटर जैसी फिल्मों की युद्ध भूमि बन जाए। ऐसी संभावनाएं तलाशनी चाहिए, जिससे यह दुनिया ज्यादा करुणामय व सुरक्षित बने। इसकी संभावनाएं तलाशने के लिए हमें एक चांस तो मिलना ही चाहिए।

© The New York Times

अब टैलेंट के घर-घर जा रही हैं कंपनियां

• माइक इसाक, टेक्नोलॉजी के विशेषज्ञ

आपको यह जानकर हैरानी होगी, लेकिन कि पिछले साल गूगल के इंजीनियरों पर यूनिकॉर्न कंपनियों ने सबसे ज्यादा नजरें गड़ाईं है। ये वे कंपनियां होती हैं, जो कभी स्टार्टअप थीं और आज उनकी वेल्यू एक अरब डॉलर से ज्यादा है। इन कंपनियों ने मुख्य रूप से गूगल के मैप डिविज़न के इंजीनियरों को लुभाने की कोशिश की। उनके घरों पर पत्र भेजकर इच्छानुसार वेतन की पेशकश तो थी ही, ढेर सारी सुविधाओं का भी प्रलोभन दिया गया था।

गूगल के इंजीनियरों पर अन्य यूनिकॉर्न कंपनियों की नजर इसलिए है क्योंकि उसके पास बेस्ट इंजीनियरों की टीम है। वे टेक्नोलॉजी से जुड़ा कठिन से कठिन काम करना जानते हैं, जिसमें प्रमुख काम मैपिंग का है। वर्तमान में उबर सबसे बड़ी यूनिकॉर्न कंपनी है, जिसकी वैल्यू 50 अरब डॉलर है। 12 महीनों में इसने गूगल की मैपिंग यूनिट को लुभाया। अभी उबर गूगल मैप पर निर्भर है, लेकिन अब वह खुद का मैप रिसर्च बना रही है। ऐसी ही एक अन्य शॉर्ट टर्म रेंटल स्टार्टअप है एयरबीएनबी। इस कंपनी ने अपने यहां कुछ ही दिनों में 100 से अधिक प्रतिभावान इंजीनियरों की नियुक्ति की है। एयरबीएनबी का काम दुनिया के किसी भी हिस्से में कस्टमर को रेंटल प्रॉपर्टी मुहैया कराना है। जरूरी नहीं कि यूनिकॉर्न कंपनियां इंजीनियर्स ही ले रही हैं। उन्हें श्रेष्ठतम नॉन टेक्निकल स्टाफ भी चाहिए। इनमें शेफ भी शामिल हैं। खबर है कि गूगल के शीर्ष अधिकारियों के लिए खाना बनाने वाले शेफ एल्विन सैन और राफेल मॉन्फर्ट को उबर और एयरबीएनबी ने अपने यहां हायर कर लिया है।

कुछ दिन पहले गूगल छोड़ चुके रॉड्रिगो इपिन्स (28) कहते हैं- सिलिकॉन वैली 'एम्पलॉयी मार्केट' बन चुका है। वे मोबाइल गेमिंग स्टार्टअप केमकॉर्ड की ओर आकर्षित हैं। इपिन्स ने गूगल के लिए पांच साल तक काम किया। उन्हें रोजाना एक या दो ई-मेल कंपनियों की ओर से आ रहे हैं। उन्हें कहा जा रहा है कि अगर वे जॉब बदलने की इच्छा रखते हैं तो उस कंपनी में संपर्क करें। वे कहते हैं- अब यह आसान हो गया है कि मैं जिस कंपनी में काम करना चाहता हूं, वहां जा सकता हूं। सिलिकॉन वैली में प्रतिभावान इंजीनियर भर्ती करने की यह लड़ाई सतत चलती रहती है। कंपनियां वेज वॉर पर उतर आई हैं। इंजीनियर आकर्षित करने के लिए वे 6 फिगर सैलरी और शेयर ऑफर कर रही हैं। इस लड़ाई में नई कंपनियां भी हैं। स्टार्टअप कंपनियों पर रिसर्च करने वाली 'सीबी इनसाइट' के अनुसार सिलीकॉन वैली में 124 कंपनियां ऐसी हैं। ऐसी प्रतिस्पर्धा शीर्ष स्तर पर भी है। अमेजन के सीईओ जेब बेजोस ने बताया है कि किस तरह प्रतिदिन अमेजन से अन्य मल्टीनेशनल कंपनियां इंजीनियर हायर कर रही हैं।

© The New York Times